

रस्य भीतस्य गृहस्थस्य भविष्यति । युगान्ते समनुप्राप्ते नान्या भार्यासमा गतिः ॥ HARIV. 11180.

निर्वीज (निस् + वीज) 1) adj. ohne Samen, nicht zeugend: समाधि JOSAG. 1, 51. Davon nom. abstr. ० व n.: निर्वीजत्वात् न किंचिदुत्पादयतीत्यर्थः TATTVAS. 18. — 2) f. श्री eine Traubenart ohne Kerne. Kischmisch RĪGĀN. im ÇKDR.

निर्वीर (निस् + वीर) 1) adj. proparo. der Männer —, der Helden beraubt TS. 7, 3, 11, 1. नाकृष्टं न च टङ्कितं न नमितं नात्यापितं स्थानतः केनापीदमहो मरुद्वनुरतो निर्वीरमुर्वीतलम् MABĀN. im ÇKDR. f. श्री von einer Frau, die keinen Mann und keine Söhne hat H. 330. HALĀJ. 2, 331. — 2) f. श्री N. pr. eines Flusses: ये तु दानं प्रयच्छन्ति निर्वीरसंगमे नराः MBH. 3, 8117; vgl. निर्वीरा VP. 182, N. 17. — 3) n. N. pr. eines Wallfahrtsortes MBH. 3, 8116.

निर्वीर्य (निस् + वीर्य) adj. der Pflanzen beraubt BHĀG. P. 4, 30, 45.

निर्वीर्य (निस् + वीर्य) adj. kraftlos, unmännlich, muthlos; subst. Schwächling TBR. 1, 1, 9, 8, 3, 12, 3. ÇAT. BR. 2, 1, 2, 9. MBH. 1, 3692, 2, 668. 670. 4, 1175. 5, 4523. HARIV. 8727. R. 1, 76, 11. 3, 69, 5. 5, 83, 20. PRAB. 43, 13. Davon nom. abstr. ० ता f.: उप्यमानं मुहुः नेत्रं स्वयं निर्वीर्यतामियात् erschöpft sich, kommt so weit, dass es Nichts mehr hervorzubringen vermag. BHĀG. P. 7, 11, 33.

निर्वृत (निस् + वृत्) adj. f. श्री baumlos MBH. 3, 338. KĀM. NĪTIS. 14, 36.

निर्वृति (von वृत् mit निस्) 1) f. a) innere Zufriedenheit, Wohlbehagen, Glückseligkeit, Wonne, Entzücken; = सुख H. 1370. an. 3, 271. 272 (wo fälschlich मुख gedruckt ist). MED. t. 120. = सुस्थितत्व TRIK. 3, 3, 161. = सुस्थिति MED. = सौम्य (d. i. सौमध्य) H. an. निर्वृतावेदना नि च MBH. 2, 893. विचार्य खलु पश्यामि तत्सुखं यत्र निर्वृतिः 12, 4114. हृदयस्य N. 22, 3. (अराजके जनपदे) वेदान्नाधीयते विप्रा न च विन्दते निर्वृतिम् R. GORR. 2, 69, 16. अर्ताः प्रजा नरव्याघ्रं क्व नु यास्यन्ति निर्वृतिम् 3, 71, 7. SUÇR. 2, 343, 16. न ब्रह्म संस्मरन्ति निर्वृतिमेषि केन BHARTṚ. 3, 71. RAGH. 9, 37 स प्राप प्रियालिङ्गनिर्वृतिम् 12, 65. ÇĀK. 178. स्वर्गादधिकतरं निर्वृतिस्थानम् 100, 17 (die richtige Lesart für निर्वृति). VIKR. 28. सानन्दमिव निर्वृतिम् KATHĀS. 10, 205. रतिनिवृत्ति 16, 123. 26, 283. VID. 323. PĀNKAT. 3, 9, 1, 383. VET. in LĀ. 31, 12. BHĀG. P. 2, 6, 7. 3, 13, 50. 5, 1, 41. 4, 4. 14, 17. MĀRK. P. 23, 108. PRAB. 89, 4 (wo mit der v. l. so st. निवृत्ति zu lesen ist). 93, 4. ÇĪC. 4, 64. Hierher viell. auch LALIT. ed. Calc. 42, 2. 138, 2. Nach FOUCAUX Erlösung. Vgl. चित्. — b) Erlösung (निर्वाण, मोक्ष) TRIK. H. 74. H. an. — c) das zur Ruhe-Kommen (= निवृत्ति) भूम्यम्बुवायुभिः पितं तिप्रमाप्नोति निर्वृतिम् SUÇR. 4, 132, 12; vgl. das gleichbedeutende शम in der vorangehenden und folgenden Zeile. — d) Untergang, Tod (अस्तंगमन, मृत्यु) MED. H. an. Durch Tod über- setzt BURNOUR das Wort BHĀG. P. 3, 30, 4. fg., doch scheint hier Bed. 1. besser zu passen. — e) Ungezogenheit HIT. 110, 20. Falsche Form für निवृत्ति, wie die v. l. hat. — 2) m. N. pr. eines Mannes HARIV. 1206. eines Sohnes des Vṛṣṇi VP. 422. BHĀG. P. 9, 24, 3.

निर्वृत s. u. वर्त् mit निस्.

निर्वृतशत्रु (नि + शत्रु) m. N. pr. eines Fürsten der Kaliūga HARIV. 6385. 6627. Die richtige Form wird wohl निवृतशत्रु sein. — Vgl. नि- नर्तशत्रु.

निर्वृति (von वर्त् mit निस्) f. 1) das Zustandekommen, Fertigwerden. Ausbildung: फल° KĀTJ. ÇR. 1, 2, 18. M. 12, 1. MĪB. 1, 4331. अर्थ° R. 5, 59, 10. KĀTJ. ÇR. 1, 5, 2. 7, 18. 4, 3, 10. यज्ञ° M. 4, 23. अङ्गप्रत्यङ्ग° SUÇR. 1, 323, 15. कार्य° 2, 331, 20. भाव° SĀMĀJAN. 32. ग्रामस्य MĀDHAVAKĀRA im ÇKDR. नाम° Entstehung des Namens R. 1, 26, 23 (27, 22 GORR.). — 2) ungebührliches Benehmen. Unart: एतस्य सेवकस्य तावन्मरुती निर्वृतिः (so die v. l. für निवृतिः) । यतो युष्मदर्थं नीयमानं कर्पूरमम्ना हि. 110, 20. Vgl. निर्वृतिन्. — 3) fehlerhaft für निवृति innere Zufriedenheit u. s. w. ÇĀK. 100, 17 (v. l. निवृति). PĀNKAT. 73, 16 (v. l. निवृति). विरु- तनिवृतिनिवृतिः BHĀG. P. 5, 26, 17. — 4) fehlerhaft für निवृत्ति Unthätig- keit BURN. Intr. 441.

निर्वृष (निस् + वृष) adj. der Stiere beraubt: गोष्ठ HARIV. 4108.

निर्वृग (निस् + वेग) adj. ohne heftige Bewegung, nicht wogend, ru- hig: समुद्र R. 1, 55, 9 (56, 9 GORR.). 2, 33, 29 (21 GORR.). (उदकम्) यत्का- द्यमानं निर्वृगम् SUÇR. 1, 174, 6.

निर्वृतन (निस् + वे°) adj. keinen Lohn empfangend RĪGĀ-TAR. 5, 204.

निर्वेद (von विद् mit निस्) m. 1) Ueberdruß, Ekel; mit gen. und loc.: न चास्य जीविते राजनिर्वेदः समज्ञायत MĪB. 11, 144. न चैव जीवितशा- यो निर्वेदमुपगच्छति 148. तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च BHĀG. 2, 52. यावद्दामस्य निर्वेदस्तत्र वै चित्तमागतः R. 3, 55, 19. ज्ञात°. कर्म°. ध- र्म°. MBH. 12, 7901. तद्वचननिर्वेदेन weil er dieser Reden überdrußig war PĀNKAT. ed. ORH. 63, 21. अनिर्वेदं यत्नं कर्त्तुं so v. a. unverdrossen sich bemühen R. 5, 15, 6. — 2) vollkommene Gleichgültigkeit gegen die Welt MUND. UP. 1, 2, 12. ० धृतकायायं भित्तुम् MĀRK. 113, 3. BHĀG. P. 1, 13, 25. 19, 14. 3, 24, 1. 5, 1, 37. स° DHĪRTAS. 71, 2. — 3) Verzweiflung, Verzagttheit, Kleinmuth: तत्त्वज्ञानापदोर्षादेर्निर्वेदः स्वावमानना । दैन्य- चिन्ताश्रुनिश्चासवैवर्ण्याच्छ्रुतितादिकृत् SĀH. D. 64, 8. 63, 20. H. 321. HALĀJ. 4, 69. ÇAT. BR. 2, 3, 4, 6. MBH. 12, 5723. 13, 70. 72. R. 1, 55, 10. 3, 43, 28. 75, 15. 5, 26 in der Unterschr. des Kap. परिभवाविर्वेदमापद्यते MĀRK. 8, 12. KATHĀS. 4, 26. 6, 155. 7, 52. PĀNKAT. II, 62. 49, 16. 127, 17. BHĀG. P. 5, 14. 15. अनिर्वेदः श्रियो मूलमनिर्वेदः परं सुखम् । अनिर्वेदो हि सततं सर्वार्थेषु- नुवर्तते ॥ R. 5, 15, 5. 4, 9, 18. PĀNKAT. I, 374. अनिर्वेदप्राप्याणि श्रयांसि भवन्ति VIKR. 68, 6.

निर्वेदवत् (von निर्वेद) adj. gleichgültig gegen Alles: बहुनिर्वेदवान्- शम् PĀNKAT. III, 188.

निर्वेद्यम (von व्यद् mit निस्, mit Ergänzung von कर्ण eine best. Ver- anstaltung des Ohres SUÇR. 1, 33, 14. 20.

निर्वेपन (निस् + वे°) adj. nicht zitternd, nicht flackernd: दीप VARĀH. BRH. S. 79, 2.

निर्वेश (von विष् mit निस्) m. 1) Lohn, Vergeltung, Bezahlung AK. 2, 10, 39. 3, 4, 28, 217. H. 362. an. 3, 721. MED. Ç. 21. M. 6, 45, v. l. für निर्देश und निदेश. पापयोषिताम् TRIK. 3, 3, 63. रत्नानिर्वेशो राजभागः गुल्फः Schol. zu P. 5, 1, 47. DAÇAK. 200, 10. भर्तुः पिण्डस्य निर्वेशं कर्तुमि- च्छामि R. 3, 33, 25; vgl. निवेश्य. — 2) Sühne: अनिर्वेश der seine Sünden nicht gesühnt hat BHĀG. P. 5, 26, 18. अकृत° 6, 1, 68. अयं हि कृतनिर्वेशो जन्मकायंकृतसामपि 2, 7. — 3) Genuss, = भोगः उपभोग AK. 3, 3, 20. 3, 4, 28. 217. H. 638. H. an. HALĀJ. 4, 70. भोग in MED. ist wohl nur Druckfehler. — 4) Ohnmacht H. an. MED.